Dr. Sarita Devi
Assistant professor
Department of Psychology
Maharaja college, Ara

U.G. semester 4
MJC-5 (Abnormal Psychology)

Dynamic Aspects of Mind

Psychoanalytic theory मनोविज्ञान के अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन सिगमंड फ्रायड ने किया। फ्राइड, ऑस्ट्रिया के फ्रीवर्ग शहर में मनोचिकित्सक थे जिन्होंने अपने विचारों तथा 40 साल के नैदानिक चिकित्सा अनुभवों के आधार पर इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया। व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने एवं उसकी व्याख्या करने में इस सिद्धांत की भूमिका आज भी काफी है।

प्रत्येक व्यक्ति में जन्मजात शारीरिक उत्तेजना पाई जाती है जिसे फ्राइड ने मूलप्रवृत्ति कहा है। इन उत्तेजनाओं या मूलप्रवृत्ति द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के व्यवहार निर्धारित किए जाते हैं। फ्रायड ने मूलप्रवृत्ति को मुख्यतः दो भागों में बांटा है:-

1. **जीवन मूलप्रवृत्ति (Life instinct)**

2. **मृत्यु मूलप्रवृत्ति (Death instinct)**

1. **जीवन मूलप्रवृत्ति (Life instinct)** -फ्रायड ने जीवन मूलप्रवृत्ति को इरोज (Eros) कहा है। इरोज द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के रचनात्मक कार्यों का निर्धारण होता है।

2. **मृत्यु मूलप्रवृत्ति (Death instinct)**- फ्रायड ने मृत्यु मूलप्रवृत्ति को थैनाटोस (thanatos) कहा है। थैनाटोस द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के विध्वंसात्मक कार्यों तथा आक्रमणकारी व्यवहारों का निर्धारण होता है।

सामान्य व्यक्तित्व में इन दोनों तरह की प्रवृत्तियों में एक संतुलन बना होता है। यह संतुलन तभी स्थापित हो पाता है जब दोनों मूल प्रवृत्तियों के बीच हुए संघर्षों के समाधान हो जाए। इस तरह के समाधान के लिए फ्रायड ने मुख्य तीन प्रतिनिधियों (Agents) का वर्णन किया है:-

1. **उपाहं (Id)**

2. **अहं (Ego)**

3. **पराहं (Super Ego)**

Edit with WPS Office

Id:

Pleasure principle

Ego:

Reality principle

Superego:

Idealistic principle

इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है:-

1. उपाहं (Id)

Id की प्रवृत्तियां जन्मजात होती है। Id सिर्फ आत्म संतुष्टि में विश्वास रखता है। यह किसी नियम को मानने वाली नहीं होती है। इसे उचित-अनुचित, विवेक-अविवेक, समय, स्थान आदि से कोई मतलब नहीं होता है। Id की प्रवृत्तियां आनंद सिद्धांत (Pleasure principle) द्वारा निर्धारित होती हैं क्योंकि ऐसी प्रवृत्तियों का मुख्य उद्देश्य आनंद देने वाले प्रेरणाओं की संतुष्टि करना होता है। व्यक्ति की ऐसी प्रवृतियां अचेतन मन में होती है इसीलिए ऐसी प्रवृत्तियों को वास्तविकता से मतलब नहीं होता है। अगर Id को नियंत्रित ना किया जाए तो वह व्यक्ति को संकट में डाल सकता है। Id की प्रधानता वाले व्यक्ति कार्य करने के पहले उसके परिणामों की चिंता नहीं कर पाते हैं। इड की तुलना **आदमी के भीतर का पशु (Animal inside a human)** से की जा सकती है।

Freud के अनुसार इड की कुछ खास विशेषताएं होती हैं, जिनमें निम्नांकित प्रमुख है:-

1. Id में जीवन मूलप्रवृत्ति तथा मृत्यु मूलप्रवृत्ति दोनों का ही समावेश रहता है।

2. Id का संबंध जीवन की वास्तविकता से नहीं होता है।

3. Id आनंद सिद्धांत (Pleasure principle) द्वारा निर्देशित होता है।

4. Id अतार्किक एवं असंगठित होता है।

5. Id की इच्छाएं नैतिकता से परे होती है।

6. Id पूर्णता अचेतन होता है।

2. अहं (Ego)

बच्चा जन्म के बाद पूर्णतः Id के अधीन होता है। और अपनी हर तरह की इच्छा की पूर्ति करना चाहता है। पर सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के कारण उसकी हर इच्छा की पूर्ति नहीं हो पाती है और तब उसे अपनी इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए तर्कों

Edit with WPS Office

का सहारा लेना पड़ता है जिस वजह से उसका संबंध वास्तविकता से स्थापित होता है और इसी प्रक्रिया में उसमें Ego का विकास होता है। Ego वास्तविकता सिद्धांत (Reality principle) द्वारा नियंत्रित होता है। Ego को व्यक्तित्व का निर्णय लेने वाला शाखा माना गया है। चूंकि ईगो अंशत: चेतन, अंशत: अर्ध्दचेतन तथा अंशत: अचेतन होता है इसीलिए ईगो इन तीनों स्तरों पर निर्णय लेने में सक्षम होता है। ईगो की तुलना **आदमी के भीतर का आदमी (Man inside a human)** से की जा सकती है।

फ्राइड के अनुसार Ego की कुछ खास विशेषताएं होती हैं जिनमें निम्नांकित प्रमुख है:-

1. Ego वास्तविकता सिद्धांत (Reality principle) द्वारा नियंत्रित तथा निर्देशित होता है।

2. Ego का संबंध नैतिकता या अनैतिकता से नहीं होता हैं इसका संबंध सिर्फ वास्तविकता से होता है।

3. Ego उचित या अनुचित नहीं सिर्फ अपने फायदे की बात सोचता है।

4. Ego को तार्किक एवं विवेकपूर्ण निर्णय लेने वाला शाखा माना गया है।

5. Ego, Id तथा Super ego के बीच समायोजक (Adjuster) के रूप में कार्य करता है।

6. Ego Conscious, Subconscious, Unconscious तीनों स्तर पर कार्य करता है।

3. पराहं (Super Ego)

Super ego व्यक्ति का नैतिक तंत्र है। यह आदर्शवादी सिद्धांत (Idealistic principle) द्वारा नियंत्रित होता है एवं आदर्शों के अनुरूप कार्य करता है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, समाजीकरण की प्रक्रिया में वह अपने माता-पिता के साथ तादम्य स्थापित करने लगता है। माता-पिता तथा समाज के नियमों एवं शिक्षाओं के अनुसार कार्य करने पर बच्चे को प्यार और प्रशंसा मिलता है तथा नियमों के उल्लंघन से उसे सजा मिलती है, जिससे बालक में अपराध बोध उत्पन्न होता है। परिणामस्वरूप, बच्चा यह सीखने लगता है कि क्या उचित है तथा क्या अनुचित है ? इस तरह से बच्चे में Super ego के विकास की शुरुआत होती है। Super ego भी Id की तरह अवास्तविक होता है और Ego को नैतिक कार्यों को करने के लिए बाध्य करता है। उसे व्यक्ति के वास्तविक परिस्थिति का ख्याल नहीं रहता है जिस वजह से यह व्यक्ति को संकट में डाल सकता है। Super ego को **एक आदमी के भीतर देवता (God inside a Human)** के रूप में समझा जा सकता है।

Freud के अनुसार super ego की कुछ खास विशेषताएं हैं जिनमें निम्नांकित प्रमुख है:-

1. Super ego सामाजिक एवं सांस्कृतिक नियमों का पालन करता है।

2. Super ego व्यक्तित्व की आदर्शवादी सिद्धांत (Idealistic principle) द्वारा नियंत्रित तथा निर्देशित होता है।

3. Id के समान ही superego का भी संबंध जीवन की वास्तविकता से नहीं होता है।

4. Super ego व्यक्ति को संकट में डाल सकता है।

5. Superego व्यक्ति की अनैतिक प्रवृत्तियों पर रोक (Ego को बाध्य करके) लगवाता है।

6. Superego conscious, subconscious एवं unconscious तीनों स्तर पर कार्य करता है।

Edit with WPS Office

Id की प्रवृत्तियां तथा Super ego की प्रवृत्तियां परस्पर विरोधी होती है और दोनों Ego को अपनी अपनी ओर खींचने में व्यस्त रहती हैं। दोनों को ही व्यक्ति की वास्तविक परिस्थिति का ख्याल नहीं रहता है जिस वजह से व्यक्ति को संकट में पड़ सकता है। लेकिन, Ego को व्यक्ति की वास्तविक परिस्थिति का ख्याल रहता है तथा उससे संबंधित परिणामों को गंभीरता पूर्वक सोच कर कार्य करता है कि उसे कितना फायदा होगा। दूसरे शब्दों में, Ego को उचित या अनुचित से कोई मतलब नहीं होता है वह अवसरवादी होता है।

Edit with WPS Office